ACIDOL SYRUP
एसीडोल सिरप

औशधीय प्रमाणिक विवरण :

यह योग आन्त्रगत, उदर एवं यकृत जनित विकारों का शमन करने हेतू अद्भुत प्रभावकारी है।

प्रभावकारी वनौशधीयों का विवरण :

सौंफ, सौंठ, सनाय, हरड़, बहेड़ा, आंवला, कालीमिर्च, दालचीनी, छोटी पिप्पल, नागरमोथा, जीरा, अम्लबेत, भूईआंवला, नि□ोत, चित्रक, कुटकी, वायविडंग, तेजपत्र, कलौंजी, डीकामाली, पितपापड़ा, यश्टिमधु, गिलोय, पुर्ननवा इन सभी वनौषधीयों को समकक्ष प्रभावकारी वनौषधीयों द्वारा भावित कराकर फोर्टिफाइड कर निर्माण किया गया है।

औशधीय गुणधर्म :

यह योग भोजन चया–पच्या क्रिया को सबल बनाता है अमाश्यगत अम्ल पित्त (हाइपर एसीडिटी रोग के लिए) परम गुणकारी है। आन्त्रशूल, आन्त्रशोथ (सूजन), आन्त्र संक्रमण, आन्त्र कृमि, आन्त्रदाह रोगों का शमन कर आन्त्रगत शुद्ध प्राणवायु का सचार करता है। जीर्ण कब्ज रोग में यह योग वृहत आन्त्र में पर्याप्त मात्रा में जल संचार का नियमन कर रोग निवारण हेतू अद्भुत असरकारक है। यकृत जनित विकार खट्टे डकार, पाचन क्रिया का हास, भूख की कमी, पीलीया, यकृत वृद्धि, यकृत कष्टकारी SGOP एवं SGOT रसों का अपघटन जैसे कष्टसाध्य रोगों का शमन करने करने हेतू अदभुत गुणकारी है।

- जीर्ण पित्त (एसीडिटी) रोग में एसीडोल का सेवन नोनी अमृत व बायोमेगा के साथ
- यकृत एवं उदर विकारों में एसीडोल का सेवन लीवोडेक्स व बायोमेगा के साथ
- कब्ज व बवासीर रोग में एसीडोल का सेवन पाइलोरेक्स व बायोमेगा के साथ
- जीर्ण कब्ज रोग में एसीडोल की मात्रा दुगुणी सेवन करावें व साथ में वर्मीसाइड 4 दिन तक 25 मिली रोज एक समय खाली पेट देकर 15 दिन बाद पुनः दोहरावें यह क्रम औषध सेवनकाल में तीन बार करें।

औशध सेवनकाल : 45–90 दिन तक रोगानुसार

मात्रा : 3–8 माह के बच्चों को 1/2-1/2 (2.5-2.5ml) चम्मच प्रातः–सांय व्यसकों को 2-2 (10-10ml) चम्मच प्रातः–सांय खाली पेट या खाना खाने के तुरन्त बाद

दुश्प्रभाव : कोई नही

निर्देश : दस्त, पेचिश रोग में औषध सेवन निषेध है लम्बे समय तक औषध सेवन चिकित्सक की देखरेख में ही करें।